पाठ 12
समय पर मिलने वाले

● **हरिशंकर परसाई**

आइए, सीखें : व्यंग्य विधा का परिचय। उर्दू, अंग्रेजी व हिन्दी शब्दों को पृथक कर पहचानना।

आदमी तीन तरह के होते हैं- (1) समय पर घर न मिलने वाले (2) समय पर किसी के घर न जाने वाले (3) न समय पर घर मिलने वाले और न समय पर किसी के घर जाने वाले।

इसके बाद कुछ मुट्ठी-भर जीवधारी बचते हैं,जो समय पर घर मिलते हैं और समय पर दूसरे के घर भी जाते हैं। सज्जनतावश हम इन्हें भी 'आदमी 'कह देते हैं ये असल में 'टाइमपीस' हैं। ये घर में रहेंगे तो टाइमपीस देखते रहेंगे और बाहर होंगे तो हाथ घड़ी देखते रहेंगे। इन्हें हम बर्दाश्त कर लेते हैं, मगर इनकी चर्चा करना व्यर्थ है।

चर्चा उनकी करनी है, जिन्होंने सुबह आठ बजे घर पर मिलने का वादा किया था, पर वे घर पर नहीं हैं। हम उनकी बैठक में इंतजार कर रहे हैं। बड़ा लड़का शिष्टता का निर्वाह करने के लिए बैठा हुआ कोई किताब पढ़ रहा है। वह बीच-बीच में आँख की कोर से हमे देख लेता है कि हम उठनें की तैयारी कर रहे हैं या नहीं। हम तनाव कम करने के लिए उससे उसकी पढ़ाई के बारे में पूछ लेते हैं, खेल के बारे में बात कर लेते हैं। वह हमारे बड़े सवाल का छोटा-सा जवाब देता है और हमें लगता है कि हम बच्चे हैं और किसी बुजुर्ग के सामने बचकानी बक-बक कर रहे हैं। हम अखबार पढ़ने लगते हैं। समाचार पढ़कर विज्ञापन पढ़ने लगते हैं। बीच-बीच में पूछ लेते हैं , ''कहाँ गए हैं?'' वह जवाब देता है, ''पता नहीं।''

''कब तक आएँगे?''

''पता नहीं ।''

''कुछ कह गए थे?''

'' कुछ नहीं।''

हम फिर अखबार देखने लगते हैं। लड़का अब उठा है । वह चाहता है कि हम टलें। मगर हमें जरूरी काम है।

भीतर औरतें परेशान हैं। उनका बाहर स्वतंत्रता से निकलना बंद है। पास ही दरवाजा है। भीतर औरतों की बातें सुनाई पड़ती हैं-

''यह अच्छा है, सबेरे से आकर बैठ गया है, तो उठने का नाम ही नहीं लेता। अरे कह दिया कि घर पर नहीं हैं तो जाता क्यों नहीं है?''

शिक्षण संकेत -

♦ हास्य व्यंग्य से परिचय कराते हुए पाठ का हाव-भाव के साथ वाचन करें। ♦ पाठ में आए शब्दों के अर्थ बच्चों की सहायता से बताएँ। ♦ उच्चारण की शुद्धता पर विशेष ध्यान दें।

''है कौन ये?''

'' अरे वही है – क्या नाम है उसका– कुछ काम–धाम है नहीं तो यहाँ बैठे, वहाँ बैठे। ''

'' पर इनकी भी तो आदत है कि जिस –तिस से कह देते हैं कि घर आना।''

हमारा चेहरा लाल हो जाता है। कान की लोरियाँ जलने लगती हैं। मगर हमे जरूरी काम है। आखिर हम उठते हैं ।लड़के से कहते हैं'' अच्छा अब हम जाते हैं कह देना कि हम आए थे। ''

लड़का बहुत कम खुश होकर नमस्ते करता है और हमें विदा देता है।

शाम तक वे कहीं मिल जाते हैं, तो चौंककर कहते हैं, '' अरे, अरे मैं तो भूल ही गया। तुम्हें बड़ी परेशानी हुई होगी न? मुझे सख्त अफसोस है। अच्छा, कल आठ बजे आ जाओ। मैं तुम्हारा इंतजार करूँगा।''

दूसरे दिन आठ बजे हम फिर पहुँचते हैं। बड़ा लड़का फाटक पर आकर हमारे पूछने के पहले ही कह देता है–''वे घर में नहीं हैं।''

''कहाँ गए हैं?''

''पता नहीं ।''

''कब तक लौटेंगे?''

'' पता नहीं। ''

''कुछ कह गए हैं?''

'' कुछ नहीं ।''

वह फाटक तक इसलिए भागता आया है कि हम वहीं से लौट जाएँ। मगर हमें काम है, और हम खुद फाटक खोलकर भीतर आ जाते हैं। छोटा लड़का हमें देखकर दरवाजे से ही चिल्लाता भीतर भागता है, ''ओ अम्मा वो फिर आ गया । ''

हम बैठक में बैठ जाते हैं। बड़ा लड़का किताब पढ़ने लगता है। हम कल का अखबार पढ़ने लगते हैं। लड़का मुँह छिपाकर हँसता है। छोटे बच्चे दरवाजे पर आकर हमें देख जाते हैं। भीतर औरतों की बातचीत सुनाई देती है।'' लो वह तो फिर आकर बैठ गया।''

''बड़ा मट्ठर आदमी है । कह दिया कि घर पर नहीं तो जाकर अपना काम–धाम क्यों नहीं देखता?''" काम धाम कुछ हो तो देखे। (सब हँसती हैं) छोटा लड़का सारे परिवार की भावना समझकर दरवाजे पर आकर कहता है–''ए, पापा बाहर गए हैं ''

हम अनसुना करते हैं।

लड़का फिर कहता है''ए,पापा बाहर गए हैं ''

बड़ा लड़का इसे अनुचित समझता है। वह उसे डाँटता है–'' ए मुन्ने भाग यहाँ से । चुप!''

छोटा लड़का भाग जाता है, मगर फिर आता है।

''ए, पापा बाहर गए हैं ''

''ए मुन्ने चुप चाँटा खाएगा। ''

मुन्ने को अब इस खेल में मजा आने लगा है। दरवाजे पर आकर बार–बार कहता है '' ए पापा बाहर

गए हैं।'' बड़ा लड़का डाँटता है तो वह खिलखिलाकर ताली बजाता भीतर जाता है। फिर आता है।

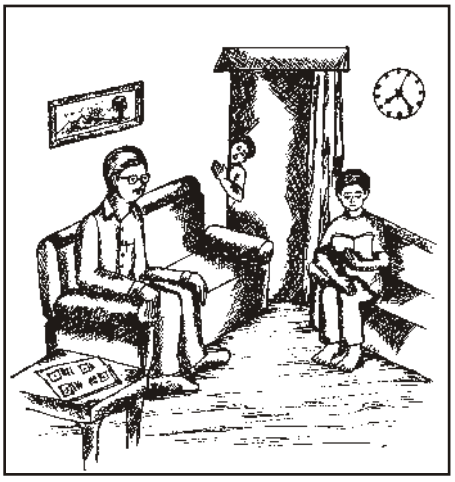

हम उठते हैं कहते हैं पता नहीं वे कब आएँगे। अच्छा हम चलते हैं।''

बड़ा लड़का बहुत खुश होता है। जब फाटक बंद करने के लिए हम मुड़ते हैं तो देखते हैं कि लगभग सारा परिवार खिड़की और दरवाजे पर है, और बड़ी दिलचस्पी से हमें जाते देख रहा है।

इतनी तपस्या के बाद अगर वे कभी घर मिल गए तो लगता है भगवान को पा लिया। जो लोग समय तय करके भी घर पर नहीं मिलते हैं, वे मुझे भगवान के एजेन्ट मालूम होते हैं। वे हमे अभ्यास कराते हैं कि कैसे बिना ऊबे, अवमानना कीअवहेलना करके अनिश्चित काल के लिए किसी के दरवाजे पर इंतजार किया जाता है। भगवान के दरवाजे पर तो कई जन्म इंतजार करना पड़ता है। अगर इधर कुछ अभ्यास हो गया, तो उधर आसानी पड़ेगी। दूसरी बात यह है कि इंतजार से प्रेम बढ़ता है। हर क्षण वही मन में रहता है और आँखें फाटक पर बिछी रहती हैं। प्रेम का नाम इसी बात से होता है कि कौन आपका कितनी देर इंतजार करता है।

मेरे एक दोस्त हैं। उनसे मैं मिलने का समय तय कर लेता हूँ पर उस वक्त हरग़िज उनके घर नहीं जाता। यह निश्चित है कि वे घर नहीं होंगे। समय की पाबन्दी के लिए जितनी सावधानी चाहिए, उससे कम कभी समय पर न मिलने के लिए नहीं चाहिए। मैं उनके घर ऐसे वक्त जाता हूँ, जब उनके मिलने की बिल्कुल संभावना नहीं है और वे मिल जाते हैं। उनके जहाँ होने की उम्मीद है, वहाँ न होकर वे वहाँ होंगे, जहाँ उनके होने की उम्मीद नहीं है। वे किसी कमेटी के सदस्य हैं, जिसकी बैठक में उन्हें होना चाहिए। मगर उस वक्त वे घर पर मिल जायेंगे।

जब मेरा उनसे नया परिचय था और कुछ औपचारिकता बाकी थी तब उन्होंने मुझे दूसरे दिन ग्यारह बजे खाने पर बुलाया। मैं ठीक ग्यारह बजे पहुँच गया। मालूम हुआ कि वे घर पर नहीं हैं। आते ही होंगे, यह सोचकर मैं बैठ गया। बारह बज गए तो मैंने उनके लड़के से पूछा– ''कहाँ गए हैं? ''उसने कहा ''कुछ पता नहीं।'' '' कब आएँगे कुछ बताकर गए हैं? ''उसने कहा''कुछ नहीं बता गए।'' मैं बैठा रहा। जब एक जब गया तब लड़के ने कहा, ''आपको कुछ जरूरी काम होगा?''

मैं उसे कैसे बताता कि क्या काम है! इतना मैं अलबत्ता समझ गया कि इस परिवार में मेरे भोजन का कोई सिलसिला नहीं है। मैं थोड़ी देर और बैठकर उठ गया। शाम को मुझे मालूम हुआ कि जब मैं उनके घर बैठा था, तब वे खुद दूसरे के घर भोजन कर रहे थे। मुझे मिले तो बहुत दु:खी हुए। कहने लगे, अरे, बड़ी गलती हो गई। मैं भूल ही गया। फलाँ के यहाँ बैठा था। उन्होंने बहुत जोर दिया तो मैंने वहीं खाना खा लिया। अच्छा, अब कल जरूर आ जाओ।''

कई सालों के उनके साथ के अनुभवों से सावधानी की दीवार मैंने अपने आस-पास खड़ी कर ली थी। वे जिस वक्त घर मिलने का वादा करते, उस वक्त मैं कभी नहीं जाता। और जब वे मेरे घर आने की बात तय करते तब मैं बेखटके बाहर घूमता। मुझे विश्वास था, वे उस वक्त नहीं आएँगे। शाम को सात बजे उन्होंने आने को कहा है तो सुबह आठ बजे तक भी आ सकते हैं। वे घर से इधर आने के लिए ही निकलेंगे, पर रास्ते में जो मिल जाएगा, उसी के हो जाएँगे, उससे बातें करने लगेंगे, उसके घर चले जाएँगे, वहीं खाना खा लेंगे; और तब उन्हें याद आएगा कि किसी से मिलने का वक्त तय किया था। वे हड़बड़ाकर भागेंगे, पर रास्ते में कोई मिल गया तो उसी के साथ हो लेंगे। लेकिन कई सालों बाद मेरी सावधानी की दीवार फिर टूट गई। हमारे एक मित्र का तबादला हो गया। मित्र से उनके भी अच्छे सम्बन्ध थे। मिले तो भावुक हो उठे-अरे, अब न जाने कब मिलना होता है। इतनी दूर चले जाओगे। कब जा रहे हो?

मित्र ने तारीख बताई।

वे बोले- तो कल शाम को हमारे साथ भोजन करो। तुम और परसाई दोनों आ जाओ। देखो, भूलना मत! मैं राह देखूँगा।

मेरे मन में खटका तो हुआ, पर उस भावुकता और आत्मीयता के सामने मैं भी गाफिल हो गया।

दूसरे दिन शाम को हम उनके घर पहुँच गए। वे घर पर नहीं थे। हम दोनों अब सचेत हो गए। मित्र ने कहा, यार उन्हें जानते हुए भी तुमने ''हाँ ''कह दिया।''

मैंने कहा ''निमंत्रण तो तुम्हारा था। मैं बाधक क्यों बनता?''

उसने कहा, लेकिन हम आ क्यों गए ? हाँ कह देते पर आते नहीं ।''

मैंने कहा, '' पर उन्होंने भोजन का प्रबंध करवा लिया हो तो , फिर न आना कितना बुरा होता।''

उसने कहा, ''कहाँ प्रबंध करवाया होगा यार? लड़के से पूछ लो न। '' मैंने लड़के से पूछा, ''क्यों वे कुछ कह गए हैं।''

''वह बोला, जी नहीं वे तो कुछ नहीं कह गए।''

हमने एक-दूसरे की तरफ देखा, उठ पड़े। रास्ते में किसी ने बताया कि वे अमुक जगह बैठे हैं।

हम वहाँ पहुँचे। इसके पहले कि मैं उनसे शिकायत करूँ, वे उस मित्र से बोले ''तो कब जा रहेहो?'' देखो भाई, जाने से पहले हमारे साथ भोजन जरूर करना। बोलो, कब आ रहे हो? कल शाम को ही आ जाओ।''

वे इस तरह बोले जैसे उन्हें तबादले का समाचार अभी मिला है।

अब हम पूरी तरह रक्षा के लिए तैयार थे। मित्र ने कहा ''आज कल मेरा बिल्कुल अनिश्चित है। इसलिए समय तय करना ठीक नहीं होगा। मैं किसी भी दिन आ जाऊँगा।''

वे बोले हाँ, हाँ, कभी आ जाओ तुम्हारा तो घर है। और मैं तो हमेशा घर पर ही रहता हूँ।''

ऐसे लोगों की निन्दा भी होती है कि वे समय का कोई ख्याल नहीं रखते और अपना तथा दूसरों का वक्त खराब करते हैं। पर मेरा मत दूसरा है, ऐसे लोग ज्ञानी हैं। वे जानते हैं कि काम अनंत है और आत्मा अमर है। जल्दी वे करें और समय का ख्याल वे रखें, जिनकी उम्र पचास-साठ साल होती है। हमारी उम्र तो कराड़ों

साल है, क्योंकि आत्मा कभी मरती नहीं। जो काम इस जन्म में पूरे नहीं हुए, उन्हें अगले जन्म में पूरे कर लेंगे या उसके बाद वाले में। इस बार आत्मा ने मनुष्य का चोला लिया है। अगली बार वह मेंढ़क का चोला भी ले सकते हैं। तब मेढ़क के रूप में हम वे काम पूरा कर लेंगे,जो आदमी के रूप में नहीं हो पाए। जल्दी क्या है?

नए शब्द

मुट्ठी भर = बहुत थोड़े । **बर्दाश्त करना** = सहन करना। **मट्ठर** = बेकार, सुस्त, आलसी। **अवहेलना** = अवज्ञा, आज्ञा न मानना। **ग़ाफ़िल** = बेसुध, असावधान। **निर्वाह करना** = निभाना । **अवमानना** = अनादर ।

अनुभव विस्तार

1. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** –

(क) सही जोड़ी बनाइए –

सज्जनतावश इन्हें भी 'आदमी' कह देते हैं	–	उस वक्त मैं कभी नहीं जाता।
वे जिस वक्त घर मिलने का वादा करते	–	उनका बाहर स्वतंत्रता से निकलना बंद है।
भीतर औरते परेशान हैं	–	'ऐ, पापा बाहर गए हैं।'
लड़का फिर कहता है	–	ये असल में 'टाइम पीस है '।

(ख) सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(अ) इसके बाद कुछ मुट्ठी भर..... बचते हैं, जो समय पर मिलते हैं।
(जीवधारी / चक्रधारी)

(ब) मित्र की भावुकता और .....के सामने मैं भी गाफिल हो गया।
(शिष्टता / धृष्टता)

(स) इस बार आत्मा ने मनुष्य का..... लिया है। (चोला, झोला)

(द) हमारा चेहरा ..... हो जाता है। (नीला, लाल)

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

(अ) परसाई जी के अनुसार मनुष्य कितने प्रकार के होते हैं?

(ब) लेखक ने 'टाइमपीस' किन मनुष्यों को कहा है?

(स) समाज में किन मनुष्यों की निंदा की जाती है?

(द) समय पर न मिलने वाले यदि समय पर मिल जाएँ तो कैसा लगता है?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न-

(अ) समय निर्धारित कर समय पर न मिलने वालों से क्या कठिनाई होती है?

(ब) समय पर न मिलने वाले की प्रतीक्षा करने में कैसा अनुभव होता है?

(स) लड़का पूछने से पहले क्या उत्तर देता है?

(द) लेखक ने कई अनुभवों के बाद क्या किया?

भाषा की बात-

(1) बोलिए एवं लिखिए-

मट्ठर, औपचारिकता, स्वतंत्रता, अवहेलना

(2) निम्नलिखित शब्दों की शुद्ध वर्तनी पर गोला लगाइए -

शिष्टता	शिस्टता	शिष्ट्यता
आनिश्चित	अनिश्चित	आनश्चिता
अवमानना	अपमानना	अपमनना
अनूभव	अनुभाव	अनुभव

(3) निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

जीवधारी, बैठक, अभ्यास, विश्वास, विज्ञापन ।

(4) निम्नलिखित शब्दों में से उर्दू, अंग्रेजी और हिन्दी शब्द छाँटकर लिखिए-

शिष्टता, अखबार, किताब, स्वतंत्रता, टाइमपीस, अफसोस, अनुचित, ऐजेन्ट, निंदा,

कमेटी, तबादला, निमंत्रण, आत्मा, ऑफिस, दिलचस्पी, टेबिल।

(5) 'भव' में 'अनु' उपसर्ग लगाकर अनुभव शब्द बना है। निम्नलिखित शब्दों में इसी प्रकार 'अनु' उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाइए–

कूल, सार, करण, मोदन, मति, मान,

अब करने की बारी

- आप मित्रों के जन्मदिन पर, रिश्तेदारों के यहाँ शादी विवाह के अवसर पर अवश्य जाते होंगे। समय से पहले और समय के बाद पहुँचने पर कैसा लगता है? अपने अनुभव मित्रों को सुनाएँ और उनसे सुनें।